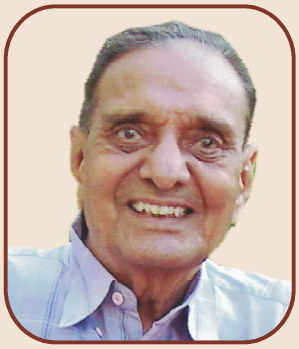

SHRI HARISH NAIK (POSTHUMOUS)

Shri Harish Naik was a distinguished author of Gujarati children's literature, and a captivating story-teller.

2 Born on 28th October, 1926 in a modest family in Surat, Gujarat, Shri Naik did his matriculation in 1943 and started writing after that. He never stopped and fondly kept on writing for children even in the last days of his life.

3. Shri Naik has written more than 2000 stories in over 500 books. His works include stories across a wide range of genres like animals, action & adventure, war, music & drama, religion & mythology, science & space, biography, comedy, radio dramas, Bhavai, children songs & lullabies, fairytales, and adaptations of international literature. He wrote in children's magazines like Zagmag (where his stories still appear), Bal Sandesh and Ramakdu. There, he created many memorable fictional characters and also wrote about real life heroes and soldiers. He started his own publication and published a monthly named "Nayak" in 1980. He published books in large font without "Jodakshar" (conjunctions) for children learning to read and for adult education (Proudh Shikshan). The books were sold for the modest price of one rupee. His adaptations like those of the stories of Hercules and the science fiction classics of Jules Verne made such literature accessible to Gujarati readers. His works have been translated into Marathi, Hindi, Sindhi and other languages.

4. Shri Naik was also a prolific storyteller. During World Children's Year in 1979, he told stories to more than 5 lakh children in 400 Municipal Schools of Ahmedabad and 100 private schools. He volunteered as a storyteller at cancer wards for children, at wards for mentally and physically challenged children, in orphanages and in slums. He wanted to bring enjoyment, to encourage and uplift all children.

5. Shri Naik was conferred the Gujarat Sahitya Parishad Best Book award for his books 6 times, by the Gujarat Government from 1960 to 1981 and thereafter by the Sahitya Akademi. He was conferred the Long Endurance Award for Children writing for 40 years and storytelling for 25 years by National Conference on Children Education in 1985, felicitated by Akhil Bhartiya Bal Kumar Sabha (Marathi, Pune) in 1989, awarded the Gijubhai Badheka Award by Gujarat Sahitya Akademi in 1990, the NCERT Prize for Prerak Rashtra Kathao in 1993, National Center for Education Research award in 1997 and Marathi Balkumar Sahitya Sabha Sanman in 1998. He received Rashtrapati Sammaan in 2007 from then President APJ Abdul Kalam, Narmad Sahitya Sabha Freniben Award in 2008, Gujarat Sahitya Akademi Award for Children's Literature in 2016 and Sahitya Akademi Bal Sahitya Puruskar in 2017.

6. Shri Naik passed away on 24th October, 2023.

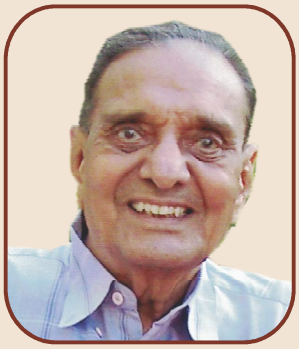

श्री हरीश नायक (मरणोपरांत)

श्री हरीश नायक गुजराती बाल साहित्य के एक प्रतिष्ठित लेखक और एक दिलचस्प कथावाचक थे।

2 28 अक्टूबर, 1926 को सूरत, गुजरात के एक साधारण परिवार में जन्मे श्री नाइक ने 1943 में मैट्रिक की और उसके बाद लेखन कार्य शुरू कर दिया। वह कभी नहीं रुके और अपने जीवन के अंतिम दिनों में भी उत्साहपूर्वक बच्चों के लिए लिखते रहे।

3. श्री नायक ने 500 से अधिक पुस्तकों में 2000 से अधिक कहानियाँ लिखी हैं। उनकी लेखन कार्य में जंतुओं, एक्शन और रोमांच, युद्ध, संगीत जैसे विभिन्न विषयों पर कहानियां और नाटक, धर्म और पौराणिक कथाएं, विज्ञान और अंतरिक्ष, जीवनी, कॉमेडी, रेडियो नाटक, भवई, बच्चों के गाने और लोरी, परीकथाएं और अंतरराष्ट्रीय साहित्य का रूपांतरण शामिल हैं। उन्होंने ज़गमग (जहाँ उनकी कहानियाँ अभी भी छपती हैं), बाल सन्देश और रामाकडु जैसी बाल पत्रिकाओं में लिखा। इनमें उन्होंने कई स्मरणीय काल्पनिक पात्र बनाए और वास्तविक जीवन के नायकों और सैनिकों के बारे में भी लिखा। उन्होंने अपना स्वयं का प्रकाशन शुरू किया और 1980 में "नाइक" नाम से एक मासिक पत्रिका प्रकाशित की। उन्होंने पढ़ना सीखने वाले बच्चों और प्रौढ़ शिक्षण के लिए "जोडाक्षर" (संयुक्ताक्षर) के बिना बड़े फ़ॉन्ट में पुस्तकें प्रकाशित की। पुस्तकें एक रुपये की मामूली कीमत पर बेची गईं। हरक्यूलिस की कहानियों और जूल्स वर्ने की क्लासिक विज्ञान कथाएं जैसे उनके रूपांतरणों को गुजराती पाठकों के लिए सुलभ बना दिया। उनकी रचनाओं का मराठी, हिंदी, सिंधी और अन्य भाषाओं में अनुवाद किया गया है।

4. श्री नायक प्रखर कथावाचक भी थे। 1979 में विश्व बाल वर्ष के दौरान, उन्होंने अहमदाबाद के 400 नगर निगम स्कूलों और 100 निजी स्कूलों में 5 लाख से अधिक बच्चों को कहानियाँ सुनाईं। उन्होंने बच्चों के कैंसर वार्डों, मानसिक और शारीरिक रूप से विकलांग बच्चों के वार्डों, अनाथालयों और मलिन बस्तियों में एक कहानीकार के रूप में स्वेच्छा से काम किया। वह सभी बच्चों को आनंदित, प्रोत्साहित करना और उनका उत्थान करना चाहते थे।

5. श्री नायक को उनकी पुस्तकों के लिए 1960 से 1981 तक गुजरात सरकार द्वारा 6 बार गुजरात साहित्य परिषद सर्वश्रेष्ठ पुस्तक पुरस्कार और उसके बाद साहित्य अकादमी द्वारा सम्मानित किया गया। उन्हें 40 वर्षों तक बच्चों के लेखन और 25 वर्षों तक कथा वाचन के लिए 1985 में नेशनल कॉन्फ्रेंस ऑन चिल्ड्रन एजुकेशन द्वारा लॉन्ग एंड्योरेंस अवार्ड से सम्मानित किया गया, 1989 में अखिल भारतीय बाल कुमार सभा (मराठी, पुणे) द्वारा सम्मानित किया गया, 1990 में गुजरात साहित्य अकादमीद्वारा गिजुभाई बधेका पुरस्कार, 1993 में प्रेरक राष्ट्र कथाओ के लिए एनसीईआरटी पुरस्कार, 1997 में राष्ट्रीय शिक्षा अनुसंधान केंद्र पुरस्कार और 1998 में मराठी बालकुमार साहित्य सभा सम्मान प्रदान किया गया। उन्हें 2007 में तत्कालीन राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम से राष्ट्रपति सम्मान, 2008 में नर्मद साहित्य सभा फ्रेनिबेन पुरस्कार, 2016 में बाल साहित्य के लिए गुजरात साहित्य अकादमी पुरस्कार और 2017 में साहित्य अकादमी बाल साहित्य पुरस्कार प्राप्त हुआ।

6. श्री नायक का 24 अक्टूबर, 2023 को निधन हो गया।